चौथा अध्याय

बाइबल में जो आप जानना चाहते हैं उसे कैसे खोजें

उत्तर ९९	चार सुसमाचार
सुसमाचार इतिहास पत्र पत्र भविष्यद्वाणी	मत्ती, मरकुस, लूका तथा यूहन्ना ने इन सुसमाचारों में प्रभु यीशु के जीवन के विषय लिखा। यह पुस्तकें उन लेखकों के नाम पर हैं। प्रत्येक ने विभिन्न बातों पर ध्यान खींचा है या बल डाला है।
उत्तर १६०	**लेखक का नाम**
प्रभाव विविधता, एकता त्रुटिहीनता खोज श्रेष्ठता	यदि किसी महत्वपूर्ण तथा विश्वसनीय पुस्तक में उसके लेखक का नाम दिया जाता हो तो हमें लेखक के नाम का विश्वास हो जाता है। बाइबल परमेश्वर को अपने वास्तविक लेखक के रूप में दर्शाती है तथा बताती है कि उसने किस तरह इसको प्रेरित किया।

प्रश्न तथा कार्य ४०

बाइबल की पुस्तकें अध्यायों और पदों में बंटी हैं ताकि हम सरलता से जो आनन्द चाहते हैं उसे खोज लें । बाइबल में पहली पुस्तक उत्पत्ति को देखें । उत्पत्ति की पुस्तक में कितने अध्याय हैं ?

प्रश्न तथा कार्य १००

सुसमाचार के ये लेखक "चार प्रचारकों" के नाम से भी जाने जाते हैं । वे हैं म·····म·····लू····· तथा यू····· । इन चारों सुसमाचार को निकालने के लिये बाइबल खोलकर अभ्यास करें ।

कार्य १६१

(यहां दो शब्द)

"हर एक ····· ····· की प्रेरणा से रचा गया ।"
२ तीमुथियुस ३ : १६

क्योंकि कोई भविष्यद्वाणी ····· की इच्छा से कभी नहीं हुई, पर भक्त जन ·····के द्वारा उभारे जाकर····· की ओर से बोलते थे ।" २ पतरस १:२१

उत्तर ४०	बाइबल-सन्दर्भ
पचास	बाइबल का पढ़ा जाने वाला अंश छोटे-छोटे भागों में बाँटकर बांई ओर अंकित कर दिया जाता है । इनको पद कहते हैं ।

उत्तर १००	चार सुसमाचार
मत्ती मरकुस लूका यूहन्ना	**मत्ती** ने प्रभु यीशु को **राजा** अथवा मसीहा के रूप में दर्शाया है । पुराने नियम की भविष्यद्वाणियों का उल्लेख करते हुए उसने बताया है कि किस तरह से यीशु ने शास्त्रों को पूरा किया ।

उत्तर १६१	भविष्यवाणियों का पूरा होना
पवित्रशास्त्र परमेश्वर मनुष्य पवित्र आत्मा परमेश्वर	पुस्तक के मध्य भाग में पृष्ठ ५० से ८४ तक भविष्यद्वाणी की पुस्तकों का पुनः निरीक्षण कर लें । इन भविष्यद्वाणी के पूर्ण हो जाने के कारण इनके प्रेरणा युक्त होने का पता चल जाता है ।

कार्य तथा प्रश्न ४१

बाइबल में आप उत्पत्ति के पहले अध्याय को देखें। क्या वह अंकित पदों में बटा हुआ है ? उत्पत्ति के पहले अध्याय में कितने पद हैं ?

प्रश्न १०१

एक उत्तर चुनकर रेखांकित करें :

कौन सा सुसमाचार है जो प्रभु यीशु के प्रतिज्ञा किये गये राजा के रूप में आने की बहुत सी भविष्यद्वाणियों का उल्लेख करता है ?

(क) मत्ती
(ख) मरकुस
(ग) लूका
(घ) यूहन्ना

कार्य तथा प्रश्न १६२

ओबद्याह १ : १; मीका १ : १; नहूम १ : १ तथा हबक्कूक १: १; २ : २ पढ़ें। प्रत्येक भविष्यद्वक्ता बताता है कि भविष्यद्वाणीयां उसके ऊपर आईं

(क) एक प्रबल प्रभाव के रूप में।
(ख) दर्शन के रूप में जो परमेश्वर ने उन्हें भविष्य की घटनाओं के विषय दिखाया।
(ग) संसार की परिस्थितियों का अध्ययन करने से।

उत्तर ४१ इकत्तीस	**बाइबल सन्दर्भ** हम बाइबल के किसी भी पद का उल्लेख कर सकते हैं : हम पहले पुस्तक का नाम लें; फिर कौनसा अध्याय और अन्त में कौन सा पद । इसी को सन्दर्भ कहेंगे ।
उत्तर १०१ (क) मत्ती	**चार सुसमाचार** **मरकुस** ने रोमियों को लिखा जो वचन के विषय नहीं जानते थे । मरकुस अपने सुसमाचार में परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के शक्ति पूर्ण कार्यों की चर्चा करता है ।
उत्तर १६२ (ख) दर्शन के रूप में जो परमेश्वर ने उन्हें भविष्य की घटनाओं के विषय दिखाया	**भविष्यवाणी का पूरा होना** जिस तरह से चल चित्रों में चित्र देखते हैं उसी तरह से भविष्यद्वक्ताओं ने राज्यों के उत्थान और पतन, यरूशलेम के विनाश और पुनर्निर्माण, तथा भविष्य में होने वाली घटनाओं को देखा ।

कार्य तथा प्रश्न ४२

अपने बाइबल में उत्पत्ति की पुस्तक, उसका दूसरा अध्याय तथा १७ वां पद निकालें : यह इस तरह शुरू होता है :

(क) हर पाक जानवर·····

(ख) और परमेश्वर ने अकाश की रचना·····

(ग) पर भले या बुरे ज्ञान का जो वृक्ष·····

(घ) और भूमि·····

प्रश्न १०२

मरकुस का सुसमाचार किस बात से भरा है ?

(क) पुराने नियम की भविष्यद्वाणियों से

(ख) प्रभु यीशु के सुसंदेश से

(ग) प्रभु यीशु के शक्ति पूर्ण कार्यों से

(घ) प्रभु यीशु की ईश्वरीयता के प्रमाण

कार्य तथा प्रश्न १६३

मीका १ : १; ३ : ८—१२; ४ : १०; ५ : ११—१४ पढ़ें।

इब्रानियों को बाबुल की बन्धुआई में मूर्त्ती पूजा करने के अपराध में ले जाया गया था, जैसा कि भविष्यद्वक्ताओं ने कहा भी था। वहाँ पर उन्होंने अपनी मूर्त्ति पूजा हमेशा के लिये त्याग दी जैसा कि मीका···· में भविष्यद्वाणी भी की गई थी।

उत्तर ४२	बाइबल सन्दर्भ
(क) पर भले या बुरे ज्ञान का जो वृक्ष · · · ·	जो सन्दर्भ आपने अभी पढ़ा है उत्पत्ति २:१७ के रूप में लिखा जाएगा। हम अध्याय की संख्या तथा पद की संख्या के बीच विसर्ग चिन्ह (:) लगाते हैं।
उत्तर १०२	**चार सुसमाचार**
(ग) प्रभु यीशु के शक्तिपूर्ण कार्यों से।	लूका ने जो एक वैद्य था अपने सुसमाचार को अपने एक यूनानी मित्र के लिये लिखा। उसने मसीह के सिद्ध व्यक्तित्व पर बल डाला और उसे परमेश्वर के पुत्र के रूप में प्रस्तुत किया है।
उत्तर १६३	**भविष्यद्वाणी का पूरा होना**
मीका ५:१३	यशायाह ने बाबुल की इस बन्धुआई के विषय में भविष्यद्वाणी की थी। उसने कहा था कि मादी लोग बाबुल को विजय कर लेंगे, और बाद में कुस्रू नामक अधिपति मन्दिर के फिर बनने की आज्ञा देगा।

कार्य तथा प्रश्न ४३

अब नये नियम की पहली पुस्तक का यह सन्दर्भ पढ़ें : मत्ती १ : २१ ।

इस पद का विषय है :

(क) प्रभु यीशु और उसके शिष्य

(ख) प्रभु यीशु की वंशावली

(ग) प्रभु यीशु का जन्म

कार्य तथा प्रश्न १०३

लूका १ : १—४ पढ़ें । यहां हम पाते हैं कि लूका के लेख का आधार यह है :

(क) इधर उधर से सुनी अफवाह ।

(ख) शिष्य के रूप में उसके व्यक्तिगत अनुभव ।

(ग) तथ्यों की सावधानी के साथ जांच पड़ताल जो अवसर पर उपस्थित गवाहों के साथ उसने विचार विमर्श करके किया था ।

(घ) प्रचलित हो गई कहानियां

कार्य तथा प्रश्न १६४

पढ़िये : यशायाह १३ : १; १७—२२; ४४ : २८; ४५ : १—४; एज्रा १ : १—४; यिर्मयाह २५ : १—१४; २६ : १०—१४ । राजा कुस्त्रु ने ठीक वही किया जैसा की यशायाह ने राजा कुस्त्रू के जन्म से १५० वर्ष पूर्व की गई अपनी भविष्यद्वाणी में कहा था । बन्धुआई ७० वर्ष तक चली; ठीक जैसा कि.....ने भविष्यद्वाणी की थी ।

उत्तर ४३	सन्दर्भ
(ग) प्रभु यीशु का जन्म	किसी पुस्तक के नाम से पहले जो संख्या लिखी हो हम पहला, दूसरा, या तीसरा शब्द लगाकर बोलते हैं । १ तीमुथियुस, २:८ को पढ़ने के लिये कहेंगे : पहला तीमुथियुस दो, आठ ।
उत्तर १०३	**चार सुसमाचार**
(ग) तथ्यों की सावधानी के साथ जाँच पड़ताल जो अवसर पर उसने उपस्थित गवाहों के साथ विचार विमर्श करके किया था ।	यूहन्ना ने प्रभु यीशु के परमेश्वर के पुत्र होने के प्रमाण दिये हैं और यह भी प्रकट किया है कि जो उस पर विश्वास करते हैं अनन्त जीवन पाएंगे ।
उत्तर १६४	**भविष्यद्वाणी का पूरा होना**
यि र्मयाह	मनुष्य अपनी सामर्थ से भविष्य की घटनाओं की सत्यता के विषय नहीं बता सकता । यदि बाइबल की सत्यता के विषय में कोई तर्क संगत व्याख्या हो सकती है तो वह यही है कि इसमें की गई भविष्यद्वाणियों का स्रोत अलौकिक है ।

कार्य तथा प्रश्न ४४

अब पुराने नियम का पहला अध्याय निकाल कर पढ़ना शुरू कर दें जब तक आप उस पद तक न पहुँच जाएं जहाँ पर यह लिखा है : "तब परमेश्वर ने कहा, उजियाला होः तो उजियाला हो गया ।" इस गद्य का संदर्भ लिखें ।

प्रश्न तथा कार्य १०४

यूहन्ना ने यह स्पष्ट कर दिया कि उसके लिखने का अभिप्राय यह था कि पढ़ने वाले यीशु मसीह को

(क) सिद्ध पुरुष समझ कर उस के उदाहरण का अनुसरण करें ।

(ख) परमेश्वर का पुत्र समझकर उस पर विश्वास करें और अनन्त जीवन पाएं ।

कार्य १६५

मत्ती १:२२; २:४–६, १६-१८; ३:१-३; ४:१२-१६; ८:१६, १७; यशायाह ५३; प्रेरितों के काम २:१४-२१, ३१; ३:१८ पढ़ें । मसीह के लिये की कितनी भविष्यद्वाणियां प्रभु यीशु में पूरी हुईं । कलीसिया के विषय में कुछ अब पूरी हो रही हैं, जबकि कुछ भविष्य के लिये शेष हैं ।

उत्तर ४४

उत्पत्ति १:३

सन्दर्भ

पूरे अध्याय, अथवा अध्यायों का सन्दर्भ देने के लिये हम विसर्ग के चिन्ह का प्रयोग नहीं करते। उत्पत्ति १, २ का अर्थ है, उत्पत्ति के पहले २ अध्याय ।

उत्तर १०४

(ख) परमेश्वर का पुत्र समझकर उस पर विश्वास करें और अनन्त जीवन पाएं ।

चार सुसमाचार

मत्ती, मरकुस तथा लूका सदृश समाचार कहलाते हैं। ये घटनाओं के विवरण में अनुरूप हैं। साथ मिलकर यह प्रभु यीशु के जीवन का सार प्रस्तुत करते हैं ।

विकल्पों का अस्वीकार करना

कोई कार्य किसके द्वारा किया गया है इसकी खोज करने का एक तरीका यह है कि सभी सम्भावनाओं पर विचार करके सबसे असंगत लगने वाली बातों को हटा दिया जाये ।

प्रश्न तथा कार्य ४५

बाइबल के अन्तिम अध्याय को खोज कर सन्दर्भ बताएं।

प्रश्न १०५

प्रत्येक रिक्त स्थान में उस सुसमाचार का नाम लिखें जिसमें प्रभु यीशु मसीह की इस विशेषता की चर्चा की गई है :

राजा.....

परमेश्वर का दास.....

मनुष्य का पुत्र.....

परमेश्वर का पुत्र.....

कार्य १६६

निम्न सम्भावनाओं, अथवा विकल्पों में से चुनें कि बाइबल के लेखक कैसे लोग थे :

(क) अच्छे, बुरे या छली लोग जो अपने विचारों को लिख रहे थे।

(ख) शैतान द्वारा प्रेरित किये गये लोग।

(ग) परमेश्वर द्वारा प्रेरित किये गये लोग।

उत्तर ४५

प्रकाशितवाक्य २२

सन्दर्भ

हम किसी अध्याय के पदों के बीच में कॉमा (,) लगा देते हैं यदि पदों का क्रम लगातार न हो।

उत्पत्ति १:१, २, ४

उत्तर १०५

राजा : मत्ती

सेवक : मरकुस

मनुष्य का पुत्र : लूका

परमेश्वर का पुत्र : यूहन्ना

इतिहास की पुस्तक

लूका ने प्रेरितों के काम नामक पुस्तक लिखी यह बताने को कि किस तरह से मसीह ने अपने जाने के बाद पवित्र आत्मा को भेजा ताकि वह यीशु के किये कार्य को करता रहे।

अस्वीकार करना

बाइबल के लेखक यह कहते हैं कि उनको परमेश्वर से प्रेरणा मिली। अच्छे लोग यह नहीं कहेंगे यदि उन्हें मालूम हो कि यह गलत बात है। वे ऐसा तभी करेंगे जब कि वे छली हों या गलती पर हों।

प्रश्न ४६

मत्ती के दूसरे अध्याय के पहले और पांचवें पद का सन्दर्भ लिखें ।

कार्य १०६

मुख्य पद प्रेरितों के काम १:८ है । इसे कंठस्थ करें ।

"परन्तु जब पवित्र -आत्मा तुम पर आएगा तो तुम सामर्थ पाओगे, और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में और पृथ्वी के छोर तक मेरे गवाह होंगे ।"

प्रश्न १६७

हम इस बात की संभावना को त्याग देते हैं कि अच्छे लोगों ने **बाइबल** को अपने ही आधार पर लिखा ।

(क) क्योंकि भले लोग यह नहीं कहेंगे कि परमेश्वर ने उनको प्रेरणा दी है यदि उन्हें मालूम हो कि यह सही नहीं है ।

(ख) क्योंकि भले लोग इस तरह की पुस्तक नहीं लिखेंगे ।

उत्तर ४६

मत्ती २:१,५

सन्दर्भ

अन्तिम दो पदों के बीच में यदि कॉमे का प्रयोग हुआ हो तो उस संदर्भ को "तथा" लगा कर बोलें । मत्ती २:१, ५, ६ को कहेंगे "मत्ती दो, एक, पांच और छः । "

इतिहास की पुस्तक

"प्रेरित" का अर्थ है, "भेजा गया" अथवा 'जिसे भेजा गया ।' प्रेरितों के काम की पुस्तक से पता चलता है कि किस प्रकार से इन "भेजे गए" लोगों ने प्रभु के सुसमाचार को संसार में फैलाया ।

उत्तर १६७

(क) क्योंकि भले लोग यह नहीं कहेंगे कि परमेश्वर ने उन्हें प्रेरणा दी है, यदि उन्हें मालूम हो कि यह सही नहीं है ।

अस्वीकार करना

बाइबल में पाई जाने वाली बुद्धि, श्रेष्ठता तथा त्रुटिहीनता असन्तुलित तथा अस्थिर मस्तिष्कों का कार्य नहीं । भले लोग यदि वे बहकाए हुए होते तो ऐसा नहीं लिख पाते ।

प्रश्न ४७

आप यूहन्ना ३ : १,२,१० को कैसे पढ़ेंगे ?

(क) यूहन्ना तीन, एक, दो, दस ।

(ख) यूहन्ना, तीसरा अध्याय पहला पद, दूसरा पद तथा दसवां पद ।

(ग) यूहन्ना तीन, पहला, दूसरा तथा दसवां पद ।

(घ) यूहन्ना तीन, पहला तथा दूसरा तथा दसवां पद ।

प्रश्न १०७

"प्रेरितो के काम" नामक शीर्षक से हमारा अभिप्राय है :

(क) उत्तराधिकारियों के काम ।

(ख) भेजे हुए लोगों के काम

(ग) प्रतिनिधियों के काम ।

(घ) अगुवाओं के काम ।

प्रश्न १६८

गलत संभावना को देखकर अस्वीकार करके ठीक उत्तर चुनें :

बाइबल के तथ्यों की उत्तमता देखकर हमें मालूम हो जाता है कि बाइबल

(क) भले आदमियों द्वारा परमेश्वर की प्रेरणा से लिखा गया ।

(ख) भले आदमियों द्वारा जिनके मस्तिष्क अस्थिर थे लिखा गया ।

उत्तर ४७	सन्दर्भ
(ग) यूहन्ना तीन, पहला, दूसरा तथा दसवां पद	यदि दो से अधिक पद लगातार हों तो हम बीच में (–) का चिन्ह लगा कर लिखेंगे । यूहन्ना १:१-३ उच्चारण में पढ़ेंगे, "यूहन्ना एक, एक से लेकर तीसरे पद तक ।"
उत्तर १०७	**इतिहास की पुस्तक**
(ग) भेजे हुए लोगों के काम	अन्य जातियों के प्रेरित पौलुस ने बहुत से देशों में सुसमाचार प्रचार किया । लूका ने भी उसके साथ कई महत्वपूर्ण भ्रमण किये तथा अपने धार्मिक तथा साहसिक कार्यों की चर्चा की है ।
उत्तर १६८	**अस्वीकार करना**
(ख) भले आदमियों द्वारा परमेश्वर की प्रेरणा से लिखा गया ।	बुरे लोग इतने सुन्दर तथा उत्तम विचारों को प्रस्तुत **नहीं कर सकते थे** और न ही वे अपने पापों के कारण अपने को दोषी ठहराते जैसा कि बाइबल के लेखक करते हैं ।

प्रश्न तथा कार्य ४८

मत्ती १ : १-४ नये नियम के पहले चार पदों का सन्दर्भ है । निम्न संदर्भों को बाइबल में तलाश करके हर एक में पदों की संख्या बताएं ।

(क) उत्पत्ति ८ : १८-२२ में ..... पद पढ़ना हैं

(ख) उत्पत्ति ८ : १८, २२ में ..... पद पढ़ना है

प्रश्न १०८

लू..... एक वैद्य तथा ऐतिहासिक लेखक थे । वह पौलुस प्रेरित के साथ जो अ..... का प्रेरित कहलाता है धर्म प्रचार के लिये गये । इन्होंने इस बात का उल्लेख किया है कि किस प्रकार से पवित्र-आत्मा ने पौलूस को बहुत से देशों में मसीही कलीसिया स्थापित करने हेतु प्रयोग किया ।

प्रश्न १६९

हम उस विचार को अस्वीकार कर देते हैं कि बुरे लोगों ने बाइबल को लिखा क्योंकि यह असंभव है कि

(क) वे इतने अच्छे इतिहास लेखक हों ।

(ख) वे इतने अच्छे विचार प्रस्तुत करें या अपने कार्यों के लिये स्वयं को दोषी ठहरायें ।

(ग) वे धर्म के विषय में लिखें ।

उत्तर ४८

पांच

दो

सन्दर्भ

एक से अधिक अध्यायों को अर्ध विराम (;) के चिन्ह से अलग करते हैं। मत्ती १:२१; १:१-६ सात पदों का सन्दर्भ है जो दो अध्यायों में लिखी हैं।

उत्तर १०८

लूका

अन्य जातियों

पौलुस प्रेरित के पत्र

पौलुस प्रेरित के १३ या १४ लेख पत्रों के रूप में हैं जो उन्होंने अपने द्वारा स्थापित कलीसियाओं को लिखे। हम इस के बारे में निश्चित रूप से नहीं कह सकते कि उन्होंने इब्रानियों को लिखा अथवा नहीं लिखा।

उत्तर १६६

(ख) वे इतने अच्छे विचार प्रस्तुत करें तथा अपने कार्यों के लिये स्वयं को दोषी ठहराएं

अस्वीकार करना

मनुष्य के पास भविष्य को ठीक रूप में जानने की सामर्थ न होने के कारण हम यह निश्चय से कह सकते है कि कोई भी भविष्यद्वक्ता आलौकिक प्रेरणा के बिना इस तरह का कार्य नहीं कर सकता।

प्रश्न तथा कार्य ४६

तलाश करके मत्ती १ : २१; २ : १; ३ : १३, १६ पढ़े । इन चार पदों से किन लोगों का पता चलता है :

(क) प्रभु यीशु, फरीसी, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला तथा शिष्य

(ख) प्रभु यीशु, ज्योतिषी, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला तथा पवित्र आत्मा

(ग) प्रभु यीशु, यूसुफ तथा गड़रिये

कार्य १०६

पौलुस प्रेरित के पत्रों की इस सूची को उतार लें :

रोमियों
१ तथा २ कुरिन्थियों
गलतियों
इफिसियों
फिलिप्पियों
कुलुस्सियों
१ तथा २ थिस्सलुनीकियों
१ तथा २ तीमुथियुस
तीतुस
फिलेमोन
इब्रानियों

प्रश्न १७०

बाइबल की भविष्यद्वाणियों का ठीक ठीक घट जाने के कारण हमें ज्ञात है कि निम्नलिखित बाइबल के लेखक के विषय के विचारों में से कौन से विचार का परित्याग करना होगा :

(क) वे अच्छे बुरे तथा भ्रम के शिकार व्यक्ति थे जो अपने विचारों को प्रस्तुत कर रहे थे ।
(ख) वे परमेश्वर के सच्चे और प्रेरित लोग थे ।
(ग) वे अच्छे व्यक्ति थे जिन्हें परमेश्वर ने प्रेरणा दी थी ।
(आप कौन सा विचार अस्वीकार करेंगे ?)

प्रश्न ४६

(ख) प्रभु यीशु, ज्योतिषी, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला तथा पवित्र-आत्मा

हाशिये पर लिखे सन्दर्भ

कुछ बाइबलों में छोटे अक्षरों में सन्दर्भ पृष्ठ के दाहिने या बाँईं ओर, बीच में या नीचे दिये जाते हैं। यह सन्दर्भ उसी विषय पर दूसरे पदों की खोज में मदद करते हैं।

वे लोग जिन्होंने शास्त्र की प्रतिलिपियां बनाईं शास्त्री कहलाये।

पौलुस प्रेरित के पत्र

उन दिनों में छापे खाने न होने के कारण पत्रों को एक कलीसिया से दूसरी कलीसिया में भेज दिया जाता था। हर जगह पर सदस्य अध्ययन करने और रखने के उद्देश्य से उनकी प्रतिलिपि बना लेते थे।

उत्तर १७०

(क) अच्छे, बुरे तथा भ्रम के शिकार व्यक्ति थे जो अपने विचारों को प्रस्तुत कर रहे थे। हम यह कथन अस्वीकार करते हैं)

अस्वीकार करना

बाइबल बुराई के विरोध में लड़ाई करती, शैतान को अपराधी ठहराकर उसकी अन्तिम पराजय तथा दण्ड की चर्चा करती है। शैतान किसी भी मनुष्य को इस तरह की बात लिखने को प्रेरित नहीं करेगा।

प्रश्न ५०

बाइबल में शब्दों के पास लिखा हुआ कोई छोटा अक्षर आपकी मदद करता है कि हाशिये में आप उसी अक्षर को देखें । इनकी मदद से आप को सन्दर्भ मिलेंगे जो :

(क) उसी विषय पर **बाइबल** के अन्य पद बताएंगे ।

(ख) उस विषय पर पढ़ने के लिये पुस्तकें बताएंगे ।

प्रश्न ११०

इस लिये कि हर कलीसिया को पौलुस प्रेरित के पत्रों की प्रतिलिपि मिल सके :

(क) उन्हें छाप कर डाक द्वारा कलीसियाओं को भेजा गया ।

(ख) उन्हें हाथ से लिखा गया क्योंकि छापे खाने नहीं थे ।

(ग) उनका चित्र खींच कर बाँट दिया गया ।

प्रश्न १७१

यह सोचना सर्वथा मूर्खता है कि शैतान ने बाइबल को प्रेरित किया क्योंकि वह :

(क) भविष्य की बातें पूरी तौर से देख सकता है ।

(ख) भविष्य का अपना विनाश मनुष्यों से लिखवाता है ।

(ग) वह भलाई के फलने तथा बुराई के दमन की बात नहीं करता जैसा कि बाइबल करता है ।

उत्तर ५०	शब्दानुक्रमणिका
(क) उसी विषय पर धर्मशास्त्र के अन्य पद बताएंगे	सदृशता (कनकॉरडेन्स) बाइबल में आये विशेष शब्दों का वर्णमाला के क्रमानुसार बनी सूची है। हर शब्द के नीचे सन्दर्भ हैं कि इस की चर्चा उत्पत्ति से लेकर प्रकाशित वाक्य तक कहाँ-कहाँ पर उल्लिखित है।
उत्तर ११०	**पौलुस प्रेरित के पत्र**
(ख) उन्हें हाथ से लिखा गया क्योंकि छापे खाने नहीं थे।	रोमियों में उद्धार की बड़ी स्पष्ट तथा प्रभावपूर्ण व्याख्या है। विश्वास द्वारा धर्मी ठहरना पुस्तक का सार है।
उत्तर १७१	**अस्वीकार करना**
(ग) वह भलाई के फलने तथा बुराई के दमन की बात नहीं करता जैसा कि बाइबल करता है।	विकल्पों के अस्वीकार कर देने की युक्तिपूर्ण विधि के द्वारा हम इस निर्णय पर पहुंचते हैं कि परमेश्वर के द्वारा प्रेरित किये गये मनुष्य ही बाइबल के लेखक हो सकते हैं।

कार्य ५१

अपने बाइबल में देखें कि उसमें शब्दानुक्रमणिका और हाशिये में सन्दर्भ है अथवा नहीं। ये टीकाएं शिक्षकों, प्रचारकों तथा जो प्रभु की सेवा में आने की तैयारी कर रहे हैं सब के लिये बड़ी लाभ-प्रद हैं।

इस पाठ के लिये अपना "छात्र-विवरण" भर दे।

प्रश्न १११

नये नियम के बीच में रोमियों को तलाश करें। रोमियों ५ : १ का मुख्य पद पढ़कर रेखांकित करें। यहाँ पता चलता है कि कोई मनुष्य उद्धार यानी परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध, इस रीति से पा सकता है :

(क) कलीसिया के रीति-रिवाज मानने से।

(ख) प्रभु यीशु पर विश्वास करने से।

कार्य १७२

विकल्पों के अस्वीकार करने वाले स्थलों का पुनःनिरीक्षण करके इस विधि तथा तर्क को बाइबल की प्रेरणा हेतु प्रयोग करें। विकल्पों को लिख दें जैसा कि कक्षा पढ़ाते समय किसी श्याम पट पर किया जाता है और उनको समझाते समय मिटाते चले जाएं।